तत्त्वार्थसूत्र क्यों महत्त्वपूर्ण है?

—प्रो. वीरसागर जैन

'तत्त्वार्थसूत्र' आखिर क्यों इतना अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है, आइए कुछ विचार करते हैं। मेरी दृष्टि में तत्त्वार्थसूत्र के विशेष महत्त्वपूर्ण होने के कतिपय प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं–

1. **सूत्रात्मक होना**– तत्त्वार्थसूत्र सूत्रात्मक है। सूत्रात्मक होना बहुत बड़ी बात है। सूत्र लिखना आसान नहीं होता। उसमें आधी-आधी मात्रा का भी ध्यान रखना पड़ता है– **'अर्धमात्रालाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः'**। सूत्रकार को एक-एक सूत्र लिखने के लिए बत्तीस-बत्तीस दोष टालने पड़ते हैं। देखें मेरा अन्य लेख– 'सूत्र के बत्तीस दोष'। सूत्रों में बहुत गूढ़-गम्भीर अर्थ भरे होते हैं। जो लोग सूत्र का लक्षण जानते हैं, वे इस बात को गम्भीरता से समझ सकते हैं–

   'अल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवद् गूढनिर्णयम्।
   निर्दोषं हेतुमत्तथ्यं सूत्रमित्युच्यते बुधैः॥'–पंचसंग्रह 4/3

2. **संस्कृत भाषा में होना**– तत्त्वार्थसूत्र संस्कृत भाषा में लिखा हुआ है। संस्कृत भाषा में लिखा हुआ होने के कारण भी इसे विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ। अब तक का जैन साहित्य प्राकृत भाषा में ही लिखा हुआ था, जिसे संस्कृत का विद्वत्वर्ग विशेष महत्त्व नहीं दे रहा था। वहाँ तो संस्कृत का ही महत्त्व बना हुआ था। इसलिए जब यह ग्रन्थ संस्कृत में लिखा गया तो इसने उन सब विद्वानों का भी ध्यान अपनी ओर, जैनदर्शन की ओर आकर्षित किया।

3. **जैनदर्शन का प्रथम संस्कृत-सूत्र-ग्रन्थ**– तत्त्वार्थसूत्र जैनदर्शन का प्रथम संस्कृत-सूत्र है, इसलिए भी इसे विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ है। प्रथम होने के कारण यह प्राचीनतम सिद्ध हो जाता है। यह बात इसे प्रामाणिकता की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण बनाती है। आश्चर्य तो यह है कि यह प्रथम होकर भी इतना सुगठित है कि इससे अच्छा अबतक नहीं बन रहा, वरना सब चीजें विकसित ही होती हैं कम्प्यूटर आदि की भांति।

4. **सभी सम्प्रदायों द्वारा मान्य**– तत्त्वार्थसूत्र की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि यह दिगम्बर-श्वेताम्बर और उनके आजतक बने सभी उपसम्प्रदायों द्वारा भी पूर्णतया मान्य है, इसकी प्रामाणिकता में किसी को भी कोई आपत्ति नहीं है। ऐसा अन्य ग्रन्थ दुर्लभ है। समयसार को दिगम्बर मानते हैं, पर श्वेताम्बर नहीं मानते। आचारांग को श्वेताम्बर मानते हैं, पर दिगम्बर नहीं मानते। किन्तु तत्त्वार्थसूत्र को सभी समान रूप से मानते हैं। इस कारण से भी यह ग्रन्थ विशेष महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

5. **हजारों टीकाएँ होना**– तत्त्वार्थसूत्र पर असंख्य टीकाएँ लिखी गई हैं। उनमें से हजारों टीकाएँ तो आज भी उपलब्ध होती हैं। तत्त्वार्थसूत्र का टीका-साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। इतना समृद्ध टीका-साहित्य अन्य किसी भी ग्रन्थ का नहीं है। इनमें भी कुछ टीकाएँ तो आकार एवं विषयवस्तु दोनों ही दृष्टियों से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। जैसे कि– तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक। इस प्रकार अपने समृद्ध टीका- साहित्य के कारण भी तत्त्वार्थसूत्र को विशेष महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

6. **सम्पूर्ण तत्त्वमीमांसा**– तत्त्वार्थसूत्र में सम्पूर्ण तत्त्वमीमांसा आ गई है। दर्शनशास्त्र मुख्यरूप से जिन तत्त्वों पर विचार-विमर्श करता है, वे सब इस एक ही ग्रन्थ में समाहित हो गये हैं। यह भी इसके महत्त्व का एक प्रमुख कारण है। वरना अन्य ग्रन्थ प्रायः एक-एक तत्त्व की ही मीमांसा को समर्पित रहते हैं। तत्त्वार्थसूत्र में सभी तत्त्व हैं– कारक तत्त्व भी और ज्ञापक तत्त्व भी, उपाय तत्त्व भी और उपेय तत्त्व भी। तत्त्वार्थसूत्र **'एकश्चन्द्रः तमो हन्ति'** के समान है।

7. **सर्व विषय समाहित होना**– तत्त्वार्थसूत्र में न केवल सम्पूर्ण तत्त्वमीमांसा आई है, अपितु जैन दर्शन के लगभग सभी विषय समाहित हो गये हैं। भले बीज रूप में ही सही, लेकिन सभी विषय इसमें समाहित करने का प्रयास अवश्य ही दृष्टिगोचर होता है। इसका लगभग हर शब्द ही एक विषय है, जिस पर नई कृति लिखी जा सकती है।

8. **चारों अनुयोग होना**– जैन-साहित्य चार अनुयोगों में विभाजित माना जाता है– प्रथमानुयोग, करणानुयोग,

चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग। तत्त्वार्थसूत्र में ये चारों ही अनुयोग येन-केन प्रकारेण समाहित हो गये हैं, कोई भी छूटा नहीं है। जैसे कि मंगलाचरण के श्लोक में ही देख लीजिए। **'मोक्षमार्गस्य नेतारं'** –यह प्रथमानुयोग हुआ, **'भेत्तारं कर्मभूभृताम्'** –यह करणानुयोग हुआ, **'ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां'** –यह द्रव्यानुयोग हुआ और **'वन्दे तद्गुणलब्धये'** –यह चरणानुयोग हुआ। इसी प्रकार ग्रन्थ के अन्दर भी चारों ही अनुयोग थोड़े-बहुत आ ही गये हैं। इस कारण से भी तत्त्वार्थसूत्र को विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ है।

9. **मंगलाचरण**– तत्त्वार्थसूत्र को विशेष महत्त्व मिलने का एक प्रमुख कारण इसका मंगलाचरण भी है। मोक्षमार्गस्य नेतारं...इत्यादि इसका मंगलाचरण-श्लोक अत्यन्त सारगर्भित है। अनेक बड़े-बड़े आचार्यों ने इसकी विस्तार से व्याख्या लिखी है। इस श्लोक में जैन दर्शन की पूरी आप्तमीमांसा आ गई है, आप्त के तीनों महत्त्वपूर्ण गुण इस श्लोक में आ गये हैं– वीतरागता, सर्वज्ञता और हितोपदेशिता। आचार्य विद्यानंदस्वामी ने तो इस श्लोक को 'तीर्थोपमानम्' कहा है (–आप्तपरीक्षा, कारिका 123)। इस श्लोक के आधार पर अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं। यह श्लोक णमोकार मन्त्र के समान ही बहुत महान है।
10. **विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में होना**– तत्त्वार्थसूत्र लगभग सभी विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों के जैनदर्शन के पाठ्यक्रम में निर्धारित है। जैनदर्शन के ही नहीं, सामान्य दर्शन शास्त्र के पाठ्यक्रम में भी अनेक विश्वविद्यालयों में निर्धारित है। वहाँ प्रतिवर्ष हजारों जैन-अजैन विद्यार्थी सरकारी स्तर पर इसका अध्ययन करते हैं और इसकी परीक्षा देते हैं। इस कारण से भी इसे सर्वत्र विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ है।
11. **जैनेतर दार्शनिकों के लिए भी उपयोगी होना**– तत्त्वार्थसूत्र जैनेतर दार्शनिकों के लिए भी बड़ा उपयोगी सिद्ध होता है। यही कारण है कि अन्य दर्शनों के विद्वान् भी जैन दर्शन का प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए तत्त्वार्थसूत्र का आश्रय लेते हैं। तत्त्वार्थसूत्र अन्य दर्शनों में उपलब्ध सांख्यसूत्र, न्यायसूत्र, ब्रह्मसूत्र आदि की तरह अपने विषय का पूर्ण परिचय प्रामाणिकता के साथ प्रदान करता है।
12. **प्रामाणिकता की कसौटी होना**– तत्त्वार्थसूत्र वस्तुतः प्रामाणिकता की कसौटी है। किसी भी विषय पर विवाद हो रहा हो, उसका कोई समाधान नहीं निकल पा रहा हो, किन्तु तभी यदि तत्त्वार्थसूत्र में कुछ मिल जाए तो तुरन्त समाधान हो जाता है। तत्त्वार्थसूत्र सर्वोच्च न्यायालय के समान है। सभी शोधार्थी अपने विषय की पुष्टि के लिए इसका प्रमाण अवश्य देते हैं। यही कारण है कि जैनदर्शन के प्रायः सभी शोधग्रन्थों और शोधपत्रों में तत्त्वार्थसूत्र के सन्दर्भ अवश्य पाए जाते हैं।
13. **सरल और कठिन दोनों का सामंजस्य होना**– तत्त्वार्थसूत्र की एक बड़ी अद्भुत विशेषता यह भी है कि यह एक ओर अत्यन्त सरल है तो दूसरी ओर अत्यन्त कठिन भी है। इसे पहली बार पढ़नेवाला व्यक्ति भी बहुत कुछ समझ जाता है और पूरा जीवन लगानेवाले विद्वान् भी निरन्तर इसकी गहराई में गोते लगाते रहते हैं। मन्दबुद्धि और तीव्रबुद्धि दोनों के लिए एक साथ उपयोगी ऐसा ग्रन्थ अन्य मिलना दुर्लभ है। कोई ग्रन्थ संक्षेपरुचि के लिए होते हैं, कोई मध्यमरुचि के लिए और कोई विस्ताररुचि के लिए, किन्तु यह सबके लिए है।
14. **पाठ की परम्परा**– तत्त्वार्थसूत्र को विशेष महत्त्व मिलने का एक प्रमुख कारण इसके नित्य पाठ की परम्परा भी है। जैन समाज में हजारों लोग, अशिक्षित महिलाएँ भी इसका प्रतिदिन पाठ करते हैं। ऐसी मान्यता प्रचलित है कि इसके एक बार पाठ करने से एक उपवास का फल मिलता है। हजारों लोगों को तो यह ग्रन्थ पूरा कंठस्थ ही पाया जाता है।
15. **वैज्ञानिकता**– वर्तमान युग विज्ञान का युग है, लोग सभी विषयों को विज्ञान की दृष्टि से पढ़ना-समझना पसन्द करते हैं और तत्त्वार्थसूत्र इस दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। इसमें ऐसी-ऐसी सैकड़ों बातें दो हजार वर्ष पहले से लिखी हुई पाई जाती हैं, जिन्हें विज्ञान हमें आज बता रहा है। यह बहुत आश्चर्य की बात है, अतः इस कारण से भी इस ग्रंथ को विशेष महत्त्व मिला है। इस ग्रन्थ में आधुनिक विज्ञान की भी लगभग सभी शाखाएँ दृष्टिगोचर होती हैं– भौतिकविज्ञान, रसायनविज्ञान, मनोविज्ञान, गणितविज्ञान, जीवविज्ञान, वनस्पति-विज्ञान आदि।
16. **संक्षिप्तता**– तत्त्वार्थसूत्र बहुत संक्षिप्त भी है। प्रायः ग्रन्थ हजारों-लाखों श्लोकप्रमाण होते हैं, परन्तु यह ग्रन्थ केवल दस पृष्ठों का ही है। इसे बहुत कम समय में आसानी से पूरा पढ़ा जा सकता है। पढ़ा क्या जा सकता है, पूरा कंठस्थ ही किया जा सकता है, हजारों लोगों ने किया भी है। इस प्रकार संक्षिप्तता के कारण भी इस

ग्रन्थ को विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है।

17. **लक्षण-विधान**– तत्त्वार्थसूत्र लक्षण-विधान की दृष्टि से भी एक बहुत महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें सम्यग्दर्शन, जीव, पुद्गल, मोक्ष, दान, व्रत, अहिंसा, सत्य आदि सैकड़ों विषयों के ऐसे निर्दोष लक्षण उपलब्ध होते हैं, जो कि परवर्ती काल में समस्त विचार-विमर्श के मूलाधार बने। ऐसे निर्दोष–सुगठित लक्षण अन्यत्र मिलना दुर्लभ हैं। यद्यपि लक्षण बनाने में सर्वार्थसिद्धिकार को भी विशेष कुशलता प्राप्त है, परन्तु मुझे लगता है कि उन्हें भी इसकी प्रेरणा तत्त्वार्थसूत्र से ही मिली है। इसप्रकार इसके अपूर्व एवं समीचीन लक्षण-विधान के कारण भी इसे विशेष गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है।
18. **तथ्यात्मक होना**– यह ग्रन्थ तथ्यात्मक भी है, जैसी वस्तुस्थिति है, वैसी सीधे-सीधे बता देता है बस, अपनी ओर से कोई उपदेश नहीं देता है। यह किसी प्रकार की भावुकता या प्रेरणा से दूर, तटस्थ है। जैसे कि **'बह्वारम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्यायुष:'** भी बताता है और **'अल्पारम्भ परिग्रहत्वं मानुषस्य'** भी।
19. **विविध शास्त्र**– तत्त्वार्थसूत्र केवल धर्म-दर्शन का ही ग्रन्थ नहीं है, अपितु उसमें अन्य भी विविध शास्त्र समाहित हुए हैं। यथा– आचारशास्त्र, समाजशास्त्र, गणित, भूगोल, खगोल, ज्योतिष, जीवविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, मनोविज्ञान आदि अनेक विषय इसमें उपलब्ध होते हैं। देखें मेरा अन्य लेख– 'तत्त्वार्थसूत्र में विविध शास्त्र'। तत्त्वार्थसूत्र का तो एक पूरा विश्वविद्यालय बन सकता है, जिसमें विविध विभाग संचालित हों।
20. **सामाजिक एकता**– सामाजिक एकता और समन्वय के लिए भी यह ग्रन्थ विशेष उपयोगी है। इसके आधार से सम्पूर्ण जैन समाज में सौहार्द्र, स्नेह और एकता का सुंदर वातावरण बनाया जा सकता है। विद्वानों को इसका इस दृष्टि से भी महत्त्व समझकर विशेष उपयोग करना चाहिए। वर्तमान में इसकी बड़ी आवश्यकता है।

इस प्रकार यहाँ मैंने 'तत्त्वार्थसूत्र' के विशेष महत्त्वपूर्ण होने के कतिपय प्रमुख कारणों की ओर आपका ध्यान आकर्षित किया है। हो सकता है कि आपके ध्यान में कुछ और भी कारण हों, कृपया उन्हें भी इनमें जोड़ लीजिए और तत्त्वार्थसूत्र के अध्ययन-अध्यापन में विशेष प्रवृत्ति कीजिए –यही मेरा विनम्र अनुरोध है। यह शास्त्र नहीं, शास्त्रों का भी शास्त्र है, महाशास्त्र है। प्राचीन काल में तो 'शास्त्र' शब्द का अर्थ ही 'मोक्षशास्त्र' अर्थात् 'तत्त्वार्थसूत्र' होता था, जैसा कि अष्टसहस्री के मंगलाचरण ('शास्त्रावतारस्तुतिगोचराप्त') और न्यायदीपिका की उत्थानिका (1/1) से सिद्ध होता है।

'रत्नकरंड', 'गोम्मटसार', 'पद्मपुराण' आदि अन्य ग्रन्थ तो एक-एक विषय पर आधारित हैं, पर 'तत्त्वार्थसूत्र' में तो मानों सभी शास्त्र भरे हैं, अतः कुशल विद्यार्थी को अन्य सब की बजाय एक इसी के पीछे पड़ जाना चाहिए हाथ धोकर। इसी में सब कुछ गर्भित हैं। एक इसी पर अच्छे से ध्यान देना चाहिए, इसी पर गोष्ठी करना चाहिए। इस ग्रन्थ के ज्ञान से आप वक्ता या लेखक भी अच्छे बनेंगे, क्योंकि यह सूत्रात्मक और अत्यंत व्यवस्थित है। इसके अध्ययन से हमारे संस्कार भी वैसे ही सारपूर्ण कहने/लिखने के बनेंगे। आचार्यों ने कहा है कि भाषण दो प्रकार के होते हैं– 1. बाँस जैसा, 2. गन्ने जैसा। बाँस जैसा भाषण लम्बा बहुत होता है, पर नीरस होता है। गन्ने जैसा भाषण छोटा होता है, पर अत्यन्त सरस होता है। कितना ही चूसने पर उसकी मिठास समाप्त नहीं होती। हमें हमेशा गन्ने जैसा भाषण करना चाहिए, बाँस जैसा नहीं। 'तत्त्वार्थसूत्र' यह कला हमें सुगम रीति से सिखा सकता है। इसप्रकार 'तत्त्वार्थसूत्र' हमें श्रेष्ठ ज्ञाता, श्रेष्ठ वक्ता और श्रेष्ठ लेखक भी बनाने में समर्थ सिद्ध होता है तत्त्वार्थसूत्र की जय हो। ❖❖